सरकार ने स्टार्टअप्स फंड जारी किया

एसआईडीबीआई करेगा योजना का संचालन

वैकल्पिक निवेश कोषों के जरिए होगा स्टार्टअप्स में निवेश

नई दिल्ली, 14 अप्रैल केंद्र सरकार ने देश के स्टार्टअप इकोसिस्टम को मजबूत करने और नवाचार आधारित उद्यमों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 10,000 करोड़ रुपये के उद्यम पूंजी कोष की अधिसूचना जारी कर दी है. इस नई योजना को 'स्टार्टअप इंडिया फंड ऑफ फंड्स 2.0' नाम दिया गया है, जो पहले से चल रही फंड ऑफ फंड्स व्यवस्था का उन्नत संस्करण है.

इस योजना का संचालन भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (एसआईडीबीआई) के माध्यम से किया जाएगा, जिसे अधिसूचना जारी होने की तारीख से कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में नामित किया गया है. इसके तहत सरकार सीधे स्टार्टअप्स में निवेश नहीं करेगी, बल्कि सेबी में पंजीकृत वैकल्पिक निवेश कोषों में पूंजी योगदान करेगी. ये एआईएफ आगे जाकर सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्टार्टअप इकाइयों में निवेश करेंगे.

सरकार की इस पहल का उद्देश्य देश में पूंजी की कमी को दूर करना और स्टार्टअप्स के लिए घरेलू स्तर पर निवेश का मजबूत ढांचा तैयार करना है. विशेष रूप से उन क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जाएगी जो भविष्य की अर्थव्यवस्था को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं. इनमें डीप टेक्नोलॉजी आधारित स्टार्टअप, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पर काम करने वाले उद्यम, तकनीक आधारित विनिर्माण इकाइयाँ और नवाचार-आधारित छोटे एवं मध्यम स्टार्टअप शामिल हैं.

> विशेषज्ञों के अनुसार यह 10,000 करोड़ रुपये का कोष भारतीय स्टार्टअप इकोसिस्टम के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, जो निजी निवेश को भी आकर्षित करेगा और दीर्घकालिक रूप से भारत को वैश्विक नवाचार केंद्र बनाने में मदद करेगा.

मार्च में महंगाई 3 .40 प्रतिशत तक बढ़ी

नई दिल्ली,14 अप्रैल. मार्च 2026 में देश के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित खुदरा महंगाई दर बढ़कर 3.40% पर पहुंच गई, जो फरवरी में 3.21% थी. इस बढ़ोतरी का मुख्य कारण खाद्य वस्तुओं की कीमतों में आई हल्की तेजी रहा. खासकर सब्जियों और जरूरी खाद्य पदार्थों की कीमतों ने महंगाई को ऊपर धकेला, हालांकि कुछ वस्तुओं जैसे प्याज, आलू और दालों में गिरावट भी देखने को मिली, जिससे कुल महंगाई को बहुत ज्यादा बढ़ने से रोका जा सका. ग्रामीण क्षेत्रों में महंगाई 3.63% रही, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह 3.11% दर्ज की गई, जिससे साफ है कि गांवों में कीमतों का दबाव अधिक है. कुल महंगाई अभी भी भारतीय रिजर्व बैंक के 2% से 6% के लक्ष्य दायरे में बनी हुई है, जो राहत की बात है.

रिलायंस फाउंडेशन बनाएगा 10 लाख साइबर सखी

ग्रामीण महिलाओं को डिजिटल सुरक्षा और ऑनलाइन सशक्तिकरण देने के लिए तीन साल में देशव्यापी अभियान

नई दिल्ली, 14 अप्रैल ग्रामीण भारत में डिजिटल सुरक्षा को मजबूत करने की दिशा में एक बड़ी पहल करते हुए रिलायंस फाउंडेशन ने सी-डैक के सहयोग से अगले तीन वर्षों में देशभर में 10 लाख महिलाओं को 'साइबर सखी' के रूप में प्रशिक्षित करने की योजना शुरू की है.

इस महत्वाकांक्षी पहल के तहत 'ई-सेफहर' नामक साइबर सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम की शुरुआत की गई है, जिसका उद्देश्य विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को डिजिटल दुनिया में सुरक्षित और आत्मनिर्भर बनाना है. यह कार्यक्रम भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत सी-डैक के तकनीकी सहयोग से संचालित किया जाएगा.कार्यक्रम की शुरुआत मध्य प्रदेश और ओडिशा से की जा रही है, जहां तेजी से डिजिटल माध्यमों से जुड़ रही महिलाओं को ऑनलाइन सुरक्षा, सुरक्षित डिजिटल लेन-देन और इंटरनेट के जिम्मेदार उपयोग के बारे में प्रशिक्षित किया जाएगा.

> इस पहल पर रिलायंस फाउंडेशन की निदेशक ईशा अंबानी ने कहा कि आज के समय में ग्रामीण महिलाएं पहले से कहीं अधिक तेजी से डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़ रही हैं. ऐसे में जरूरी है कि उन्हें न सिर्फ इंटरनेट तक पहुंच मिले, बल्कि उसे सुरक्षित और प्रभावी ढंग से उपयोग करने का ज्ञान भी हो. उन्होंने कहा कि 'साइबर सखी' कार्यक्रम के जरिए महिलाओं को आत्मविश्वास के साथ डिजिटल दुनिया का उपयोग करने और अपने जीवन एवं आजीविका को मजबूत बनाने में मदद मिलेगी.

एशिया संकट के बीच वाहन उद्योग के लिए होगी अग्नि परीक्षा

नयी दिल्ली, 14 अप्रैल वाहन निर्माता कंपनियों के संगठन सियाम का मानना है कि पश्चिम एशिया संकट से उत्पन्न परिस्थितियों के मद्देनजर अप्रैल में अग्नि परीक्षा होगी.

सियाम के अध्यक्ष शैलेश चंद्रा ने मंगलवार को वाहनों की थोक बिक्री के आंकड़े जारी करने के बाद संवाददाताओं के सवालों के जवाब में कहा कि मार्च में उत्पादन प्रभावित नहीं हुआ है, लेकिन अप्रैल में कंपनियां दबाव महसूस कर रही हैं और इस महीने कंपनियों की 'अग्नि परीक्षा' होगी.

उन्होंने कहा, ' हम उम्मीद करते हैं कि युद्ध लंबा न चले यदि ऐसा होता है वाहनों की बिक्री में एकल अंक की वृद्धि के कुछ अनुमान सही साबित हो सकते हैं. उन्होंने कहा कि फिलहाल लोग जानकारी लेने के लिए शोरूम में आ रहे हैं, लेकिन खरीदारी का फैसला लेने में देरी कर रहे हैं. टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स के प्रमुख श्री चंद्रा ने कहा कि अप्रैल के पहले दो सप्ताह में पश्चिम एशिया संकट का दबाव पड़ना शुरू हो गया है और उत्पादन की लागत बढ़ी है. उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि उच्च गुणवत्ता वाले एल्युमीनियम की आपूर्ति पहले पश्चिम एशिया से होती थी, अब कंपनियां उसका विकल्प खोज रही हैं.

उन्होंने कहा अप्रैल में यह साफ होगा कि आपूर्ति बढ़ने की रफ्तार और पहले से मौजूद कलपुर्जों और कच्चे माल के भंडार की खपत की रफ्तार में कितना संतुलन बन पाता है.

> श्री चंद्रा ने बताया कि वित्त वर्ष 2025-26 में सभी खंडों में रिकॉर्ड बिक्री दर्ज की गयी है. सात साल बाद यह स्थिति बनी है जो वाहन निर्माता कंपनियों के लिए खुशखबरी है.उन्होंने कहा कि वस्तु एवं सेवा कर की दरों में पिछले साल सितंबर में की गयी कटौती से ग्राहक धारणा मजबूत बनी हुई है. इसके साथ ही भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा पिछले साल रेपो दरों में की गयी कुल 1.25 प्रतिशत की कटौती और सरकार द्वारा आयकर छूट की सीमा बढ़ाने से भी बिक्री बढ़ाने में मदद मिली है.

आईआईएम की नौकरी छोड़ शुरू किया स्टार्टअप

रांची, 14 अप्रैल रांची की संध्या और उनके पति मोहित की कहानी उन युवाओं के लिए प्रेरणा बन गई है, जो बड़ी नौकरी छोड़कर अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने का सपना देखते हैं. दोनों ने आईआईएम त्रिची से पढ़ाई करने के बाद लाखों रुपये के पैकेज वाली नौकरी छोड़ दी और अपने जुनून को आगे बढ़ाते हुए 'ओएनजी इंडिया' नाम से अपना स्टार्टअप शुरू किया.

शुरुआत महज 40,000 के निवेश से हुई थी, लेकिन आज उनका यह ब्रांड लगभग रुपए 15 लाख के सालाना टर्नओवर तक पहुंच चुका है. इस सफर में सबसे खास बात यह रही कि उन्होंने आदिवासी संस्कृति, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक मुद्दों को अपने उत्पादों के जरिए लोगों तक पहुंचाने का अनोखा तरीका अपनाया.

उनका मुख्य उत्पाद टी-शर्ट है, जिसमें पेड़ों की कटाई, जंगलों की रक्षा, जल संरक्षण और आदिवासी जीवन से जुड़े मुद्दों को कलात्मक डिजाइन के रूप में दिखाया जाता है. इसके अलावा, वे साड़ियों पर भी इसी तरह की पेंटिंग बनाते हैं, जिसमें प्रकृति और संस्कृति का संदेश दिया जाता है.

संध्या के अनुसार, शुरुआती दौर में कई महीनों तक बिक्री बेहद कम रही, जिससे उन्हें यह भी लगा कि कहीं उन्होंने नौकरी छोड़कर गलत फैसला तो नहीं कर लिया. लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और लगातार मेहनत करती रहीं.

पतंजलि अनुसंधान संस्थान दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर

डॉ. पी. डी. सेठी राष्ट्रीय एचपीटीएलसी पुरस्कार 2025 में मिला प्रथम स्थान

हरिद्वार,14 अप्रैल वैज्ञानिक उत्कृष्टता और नवाचार की अपनी निरंतर यात्रा को आगे बढ़ाते हुए, पतंजलि अनुसंधान संस्थान ने एक बार फिर देश का गौरव बढ़ाया है. संस्थान को डॉ. पी. डी. सेठी राष्ट्रीय एचपीटीएलसी पुरस्कार 2025 में निजी उद्योग श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. पिछले वर्ष भी संस्थान को यही सम्मान प्राप्त हुआ था.

यह प्रतिष्ठित पुरस्कार संस्थान को आंवला के बीज तेल पर किए गए उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए मिला, जिसमें इसके शक्तिशाली जीवाणुरोधी (एंटी-माइक्रोबियल) और जैव-परत-रोधी गुणों को उजागर किया गया है. इस अवसर पर आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि यह पुरस्कार मात्र एक सम्मान नहीं, बल्कि पतंजलि के वैज्ञानिकों की वर्षों की मेहनत, समर्पण और वैज्ञानिक सोच का परिणाम है.

उन्होंने आगे कहा कि यह हर उस वैज्ञानिक के समर्पण की जीत है, जो प्रतिदिन विश्व को एक सरल, सुरक्षित और प्रभावी समाधान प्रदान करने के लिए दृढ़ संकल्पित है. पतंजलि के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. अनुराग वार्ष्णेय ने बताया कि डॉ. पी. डी. सेठी राष्ट्रीय एचपीटीएलसी पुरस्कार देश में विश्लेषणात्मक रसायन विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट शोध को पहचान देने वाला एक प्रतिष्ठित मंच है. इस मंच पर लगातार दूसरी बार पुरस्कार प्राप्त करना संस्थान के लिए गर्व का विषय है और यह उसकी मजबूत वैज्ञानिक आधारशिला को दर्शाता है.

> उन्होंने आगे बताया कि आंवला पर किए गए इसी शोध के आधार पर भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) द्वारा भी संस्थान को पिछले वर्ष 10वें अंतरराष्ट्रीय 'अपशिष्ट से उपयोगिता' सम्मेलन एवं 4आर पुरस्कार 2025 संस्करण में 'मेरिट पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था.ज्ञात हो कि आंवला बीज के तेल पर किए गए इन शोधों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहना मिली है. प्रतिष्ठित एल्सेवियर प्रकाशन ने पतंजलि के दोनों शोधों को एक साथ अपने शोध पत्रिका 'अनुप्रयुक्त खाद्य अनुसंधान' के अंक में भी स्थान दिया था.

जबलपुर में पोर्टर ने शुरू की सेवाएं

एमएसएमई- लोकल बिज़नेसों के लिए अब उपलब्ध रहेंगीं सेवाएं

नवभारत जबलपुर। भारत की प्रमुख डिजिटल माल ढुलाई एजेंसी पोर्टर ने जबलपुर में प्रवेश की घोषणा की है। इसके साथ ही शहर के बढ़ते एमएसएमई इकोसिस्टम के लिए कुशल और विश्वसनीय माल ढुलाई को सक्षम करने का इसका मिशन और मजबूत हुआ है। संचालन टू-व्हीलर माल ढुलाई के साथ शुरू हुआ है। इंजीनियरिंग सामान, कृषि उपकरण और एग्रो प्रोसेसिंग से जुड़े एमएसएमई के लिए एक प्रमुख क्षेत्रीय केंद्र होने के नाते, जबलपुर में पोर्टर का प्रवेश शहर के माल ढुलाई इकोसिस्टम को मजबूत करने का एक शानदार अवसर प्रस्तुत करता है। शहर के थोक विक्रेता और व्यावसायिक क्लस्टर, बढ़ती शहरी आबादी और विस्तारित औद्योगिक गतिविधियों के साथ मिलकर, शहर के भीतर तेज और विश्वसनीय माल ढुलाई की मांग को बढ़ा रहे हैं। इससे संगठित टू-व्हीलर परिवहन समाधानों के लिए काफी संभावनाएं पैदा हो रही हैं। जबलपुर के लिए सेवा है उपयुक्त पोर्टर की टू-व्हीलर सेवा जबलपुर के व्यस्त व्यापारिक क्षेत्रों और औद्योगिक इलाकों के लिए बेहद उपयुक्त है, जो एमएसएमई को विश्वसनीय माल ढुलाई में सक्षम बनाती है। इस विस्तार पर बात करते हुए, पोर्टर के वीपी - एक्सपेंशन, अंकित द्विवेदी ने कहा: 'जबलपुर जैसे शहरों में एमएसएमई एक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं, जहां विविध औद्योगिक आधार के कारण भरोसेमंद माल ढुलाई की निरंतर आवश्यकता बनी रहती है।

500 ड्राइवर-पार्टनर्स को किया गया ऑनबोर्ड

वर्तमान में शहर में सड़क परिवहन सेवाएं प्रदान करने के लिए पोर्टर द्वारा 500 ड्राइवर-पार्टनर्स को ऑनबोर्ड किया गया है। संचालन के पहले वर्ष के अंत तक यह संख्या 7,000 से 8,000 तक पहुंचने की उम्मीद है। पोर्टर वर्तमान में मध्य प्रदेश में हर तिमाही में एक लाख से अधिक ग्राहकों को अपनी सेवाएं दे रहा है, और अब तक 40,000 से अधिक ड्राइवर-पार्टनर्स इसके साथ जुड़ चुके हैं।

एनएमडीसी में अंबेडकर जयंती मनाई गई

हैदराबाद, 14 अप्रैल भारत के सबसे बड़े लौह अयस्क उत्पादक एनएमडीसी ने हैदराबाद में अपने कॉर्पोरेट कार्यालय और साथ ही देशभर में अपनी सभी परियोजना स्थलों पर भारतीय संविधान के निर्माता भारत रत्न डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की 135वीं जयंती मनाई.

समारोह का नेतृत्व एनएमडीसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अमिताभ मुखर्जी ने किया. उनके साथ श्री विनय कुमार, निदेशक (तकनीकी); श्री जयदीप दासगुप्ता, निदेशक (उत्पादन); श्री अनुराग कपिल, निदेशक (वित्त) शामिल हुए तथा कर्मचारियों के साथ डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की 135वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की.

एनएमडीसी एचओ एससी / एसटी कर्मचारी कल्याण संघ द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में कर्मचारियों और अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया. एनएमडीसी एचओ एससी / एसटी कर्मचारी कल्याण संघ के अध्यक्ष श्री बी. हनुमंत राव, तथा महासचिव श्रीमती सी. अन्नपूर्णा के साथ सभी पदाधिकारियों ने कार्यक्रम के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

एक ही नाम के उम्मीदवार, दिग्गजों को टेंशन

बंगाल से तमिलनाडु तक 'नाम' की पहेली में उलझ गया चुनाव

कोलकाता/चेन्नई. लोकतंत्र के सबसे बड़े उत्सव में जब मतदाता ईवीएम के सामने खड़ा होता है, तो उसे उम्मीद होती है कि उसका एक वोट सही उम्मीदवार की किस्मत तय करेगा. लेकिन कल्पना कीजिए कि जब आप अपने पसंदीदा नेता को वोट देने जाएं और बैलेट यूनिट पर आपको एक ही नाम के तीन अलग-अलग चेहरे और चुनाव चिन्ह नजर आएं, तो आपकी स्थिति क्या होगी?

पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के विधानसभा चुनावों में कुछ ऐसा ही नजारा देखने को मिल रहा है, जिसने न केवल चुनाव अधिकारियों को उलझन में डाल दिया है, बल्कि आम जनता के बीच भी भ्रम पैदा कर दिया है. उत्तर से लेकर दक्षिण तक, सियासी मैदान में 'नाम' की यह पेचीदा पहेली इस वक्त चर्चा का सबसे बड़ा केंद्र बनी हुई है. यह महज एक इत्तेफाक नहीं है, बल्कि राजनीति के उस शतरंज की चाल है जहां विपक्षी की जीत रोकने के लिए हमनाम उम्मीदवारों की 'क्लोन सेना' तैयार की जाती है.

पश्चिम बंगाल की आसनसोल उत्तर विधानसभा सीट पर मंगलवार को नामांकन पत्रों की जांच के दौरान एक बेहद अजीबोगरीब स्थिति पैदा हो गई. जैसे ही निर्वाचन अधिकारी ने उम्मीदवारों के नाम पुकारना शुरू किया, पूरा हॉल सन्नाटे में डूब गया. अधिकारियों ने पहले 'कृष्णेंदु मुखोपाध्याय' (निर्दलीय) का नाम पुकारा, फिर 'कृष्णेंदु चटर्जी' (निर्दलीय) और अंत में बारी आई भारतीय जनता पार्टी के आधिकारिक प्रत्याशी 'कृष्णेंदु मुखर्जी' की.

विजय के सामने खड़ी हुई 'क्लोन सेना'

बंगाल जैसी ही स्थिति सुदूर दक्षिण में तमिलनाडु के चेन्नई में भी देखने को मिल रही है, जहां सुपरस्टार से राजनेता बने विजय और उनकी पार्टी 'तमिलगा वेत्री कझगम' को निशाना बनाया गया है. चेन्नई की पेरम्बूर सीट पर, जहां से विजय खुद चुनाव लड़ रहे हैं, वहां दो और 'विजय' मैदान में उतर आए हैं. सिर्फ पेरम्बूर ही नहीं, बल्कि रॉयापुरम में डी जयकुमार के सामने तीन हमनाम उम्मीदवार हैं और चेपॉक-त्रिप्लिकेन में उधयनिधि स्टालिन के खिलाफ खड़े टीवीके उम्मीदवार डी सेल्वम के भी तीन 'डुप्लीकेट' मौजूद हैं.

राघव बनाएंगे नई राजनीतिक पार्टी?

पद से हटाए जाने के बाद 'जेन-जी' पार्टी वाले वीडियो ने बढ़ाई हलचल

नई दिल्ली. आम आदमी पार्टी में अंदरूनी खींचतान की खबरों के बीच राघव चड्ढा को लेकर राजनीतिक गलियारों में चर्चाओं का दौर तेज हो गया है. अटकलें लगाई जा रही हैं कि वह युवाओं को केंद्र में रखते हुए एक नई जेन जी राजनीतिक पार्टी बना सकते हैं.

इन चर्चाओं को उस वक्त और बल मिला, जब राघव चड्ढा ने सोशल मीडिया पर एक वायरल वीडियो साझा करते हुए उसे दिलचस्प विचार बताया. अब राघव चड्ढा के वीडियो ने जैसे ही वीडियो को शेयर किया वैसे ही इस बात की चर्चाएं तेज हो गई कि क्या राघव चड्ढा अपनी अलग पार्टी बनाएंगे, या फिर वो किसी और राजनीतिक पार्टी में शामिल हो जाएंगे. दरअसल, इंस्टाग्राम पर वायरल एक रील में एक कंटेंट क्रिएटर ने सुझाव दिया था कि राघव चड्ढा को युवाओं पर आधारित एक नई राजनीतिक पार्टी बनानी चाहिए. इस वीडियो को शेयर करते हुए चड्ढा ने जो प्रतिक्रिया दी, उसके बाद यह मुद्दा चर्चा का केंद्र बन गया. वीडियो में यह भी कहा गया कि अगर चड्ढा किसी दूसरी पार्टी में शामिल होते हैं तो उन्हें वैसा समर्थन नहीं मिल सकता जैसा उन्हें अभी मिल रहा है. वहीं अपनी खुद की पार्टी बनाना उन्हें एक मजबूत युवा नेता के रूप में स्थापित कर सकता है. आम आदमी पार्टी और राघव चड्ढा के बीच मतभेद की खबरें पहले से ही सामने आ रही थीं. हाल ही में पार्टी ने उन्हें राज्यसभा में उप-नेता के पद से हटाकर अशोक कुमार मित्तल को यह जिम्मेदारी सौंप दी.

अधीर रंजन को अपने ही लोगों से लड़ना है

कोलकाता. पश्चिम बंगाल में कांग्रेस के सबसे दिग्गज नेता अधीर रंजन चौधरी एक बार फिर मुश्किल लड़ाई में फंसे हैं. वे लगातार पांच बार जीतने के बाद पिछला लोकसभा चुनाव हार गए थे. ममता बनर्जी ने गुजरात के क्रिकेटर यूसुफ पठान को उनके खिलाफ उतारा और खुद मुर्शिदाबाद में बैठ कर उनको हरवाया.

असदुद्दीन ओवैसी ने बंगाल में नई पार्टी बनाने वाले हुमायूं कबीर के साथ तालमेल किया है. दोनों ने पहली रैली के लिए बहरामपुर को चुना, जहां से अधीर रंजन लड़ रहे है. वे दोनों अपना उम्मीदवार उतार रहे हैं.

दूसरी ओर तृणमूल कांग्रेस और भाजपा की ओर से चुनाव लड़ रही शुभ्रा मैत्रा और

अब अधीर बाबू 36 साल के बाद विधानसभा का चुनाव लड़ने उतरे हैं. एक समय उनका ऐसा जलवा रहा है कि मुर्शिदाबाद जिले में आने वाली तीन लोकसभा सीटों, बहरामपुर, जंगीपुर और मुर्शिदाबाद के नतीजे उनके हिसाब से तय होते थे. लेकिन अब अपनी विधानसभा सीट पर समस्या आ रही है. उनको अपने ही लोगों से मुकाबला है तो मुस्लिम नेता अलग घेरने में लगे हैं.

नारुगोपाल मुखर्जी भी एक समय अधीर रंजन चौधरी के करीबी थे. यह भी कहा जा रहा है कि ममता बनर्जी एक बार फिर पूरी ताकत लगाएंगी कि किसी तरह से अधीर रंजन चौधरी न जीतें. उनको पता है कि अगर अधीर रंजन जीतेंगे तो मुर्शिदाबाद इलाके में वे कांग्रेस को फिर से मजबूत कर सकते हैं. कांग्रेस की मजबूती का सीधा नुकसान ममता को होगा.

विशेष | **गली-मुहल्लों का नेटवर्क साधने वाले ही होंगे विजेता**

बंगाल में पाड़ा ही असली पावर सेंटर

कोलकाता. बंगाल की राजनीति को समझने के लिए बड़ी चुनावी रैलियों या मंचों से ज्यादा जरूरी है मोहल्लों-यानी पाड़ा- की नब्ज को समझना. राज्य में चुनावी रणनीति का असली केंद्र यही पाड़ा और उससे जुड़े स्थानीय क्लब माने जाते हैं.

राजनीतिक दलों के लिए बूथ जीतने से पहले पाड़ा जीतना अहम होता है, क्योंकि यहीं से मतदाताओं की राय बनती है और चुनावी रुख तय होता है. यही वजह है कि बंगाल में कहा जाता है- जो पाड़ा जीता, वही चुनाव जीता.बंगाल में पाड़ा सिर्फ एक इलाका नहीं, बल्कि एक सक्रिय सामाजिक-राजनीतिक संरचना है. हर गली का अपना नेटवर्क, हर क्लब का अपना प्रभाव और हर इलाके में स्थानीय प्रभावशाली चेहरे होते हैं. इसी कारण राजनीतिक दल वार्ड या विधानसभा स्तर से पहले पाड़ा स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत करने पर जोर देते हैं. राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, पाड़ा की ताकत तीन आधारों पर टिकी है- स्थानीय विश्वास, घर-घर तक पहुंच और सालभर का जुड़ाव. यही कारण है कि बंगाल का मतदाता अक्सर पार्टी से पहले अपने पाड़ा और स्थानीय नेटवर्क को प्राथमिकता देता है. इसीलिए बंगाल की सियासत में जीत का रास्ता बड़े मंचों से नहीं, बल्कि छोटे-छोटे पाड़ा और क्लबों से होकर गुजरता है.

> **क्लब बनते हैं चुनावी मशीन का इंजन**
>
> स्थानीय यूथ क्लब, स्पोर्ट्स क्लब और दुर्गा पूजा व काली पूजा समितियां चुनाव के दौरान ग्राउंड फोर्स की भूमिका निभाती हैं. ये क्लब मतदाताओं को प्रभावित करने, घर-घर संपर्क करने, वोटरों को बूथ तक पहुंचाने और इलाके की राजनीतिक गतिविधियों पर नजर रखने का काम करते हैं. इसी कारण सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस और भाजपा जैसी प्रमुख पार्टियां क्लब नेटवर्क से करीबी संबंध बनाने पर विशेष ध्यान देती हैं. राज्य में दुर्गा पूजा केवल धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक नेटवर्किंग का बड़ा माध्यम भी है. पूजा समितियों को मिलने वाला सरकारी अनुदान, पंडाल उद्घाटन में नेताओं की भागीदारी और स्थानीय जुड़ाव चुनावी माहौल को प्रभावित करते हैं.